दिनांक :- 18-04-2020
कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा
लेखक का नाम :- डा० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

अंतर स्नातक :- द्वितीय वर्ष या 12वीं कक्षा के लिए

कला संकाय :- [redacted]
विषय :- ~~कला~~ इतिहास अनुषांगिक
इकाई - दो
अध्याय :- सिंधु घाटी की सभ्यता

उल्लेखनीय है कि लोथल, कालीबंगन आदि कुछ सैंधव स्थलों से यज्ञीय वेदियाँ स्थलों से प्राप्त होती हैं। इसी प्रकार मोहनजोदड़ो से मिट्टी की बनी घोड़े की आकृति, लोथल से घोड़े की तीन मृण्मूर्तियाँ तथा सुरकोटडा से घोड़े की हड्डियाँ प्राप्त हो चुकी हैं। लोथल के घोड़े का दाया ऊपरी चौघड़ भी मिलता है जिसके दाँत बिल्कुल आधुनिक अश्व के दांत जैसे ही हैं। समुद्री यात्रा, जलयान आदि से संबंधित विवरण यह सिद्ध करते हैं कि इस सभ्यता में नागरीय तत्व पर्याप्त मात्रा में विद्यमान थे। वैदिक साहित्य में जो

भौतिक सभ्यता मिलती है वही सिंधु में भी है।
सैंधव सभ्यता की खुदाई से भिन्न-भिन्न जातियों के
अस्थिपंजर प्राप्त होते हैं। इनमें प्रोटो-आस्ट्रलायड
(काकेशियन) भूमध्यसागरीय, मंगोलियन तथा अल्पाइन
इन चारों जातियों के अस्थिपंजर प्राप्त होते हैं। मोहन
जोदड़ो के निवास अधिकांशतः भूमध्य-सागरीय थे।
अधिकांश विद्वानों की धारणा है कि सैंधव सभ्यता के
निर्माता द्रविड़ भाषी लोग थे। सुनीति कुमार चटर्जी ने
भाषाविज्ञान के आधार पर यह सिद्ध किया है कि ऋग्वेद
में जिन दास-दस्युओं का उल्लेख हुआ है वे द्रविड़
भाषी थे और उन्हें ही सिंधु सभ्यता के निर्माण का
श्रेय दिया जाना चाहिये। किंतु यह निष्कर्ष भी संदिग्ध है
यदि द्रविड़ सैंधव सभ्यता के निर्माता होते तो इस सभ्यता
का कोई अवशेष द्रविड़ क्षेत्र में अवश्य मिलता। सैंधव

Scanned with CamScanner

सभ्यता के विस्तार वाले भाग से ब्राहुई भाषा के साक्ष्य नहीं मिलते। बलूचिस्तान की ब्राहुई भाषा को द्रविड़ भाषा के साथ संबद्ध करने का कोई पुष्ट आधार नहीं है।

स्टुअर्ट पिग्गट, अल्चिन, फेयरसर्विस, जे० एफ० ड्रेल्स आदि कुछ पुराविदों का विचार है कि सैंधव सभ्यता की उत्पत्ति दक्षिणी अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, सिंध तथा तथा पंजाब (पाकिस्तान) और उत्तरी राजस्थान (भारत) के क्षेत्रों में इसके पूर्व विकसित होने वाली ताम्र-पाषाणिक संस्कृतियों के लोग कृषि कर्म तथा पशुपालन करते थे और विविध अलंकरणों वाले मिट्टी के बर्तन तैयार करते थे। खुदाई से पशु तथा नारी मूर्तियाँ भी मिलती हैं अनुमान किया जा सकता है बलूचिस्तान के लोग माता देवी की पूजा तथा लिङ्गोपासना भी करते रहे होंगे। उल्लेखनीय है कि इन संस्कृतियों के पात्रों पर प्राप्त कुछ चित्रकारियाँ, जैसे, पीपल की पत्ती

हिरण, त्रिभुज आदि सैंधव पात्रों पर भी प्राप्त होती है
कोटदीजी, कालीबंगन, बनावली तथा हड़प्पा की खुदाइयों
से प्राप्त प्राक् सैंधवकालीन स्तर स्पष्टतः नगरीकरण
के प्रमाण प्रस्तुत करते है। नगर नियोजन, उत्तर-दक्षिण
दिशा में निर्मित भवन, बस्ती दुर्गीकरण गढ़ी तथा निचले
नगर की अवधारणा, पकी ईंटों का प्रयोग, अन्नागारों का
निर्माण भवन, बस्ती का साक्ष्य मिलता है। बनावली एक
के अवशेषों से प्रौढ़ हड़प्पन विकास क्रम और अधिक
स्पष्ट हो जाता है। प्रारंभ से ही यहाँ के निवासी अपने
मकान सीधी दिशा में बनाते थे। यहाँ की खुदाई में पत्थर
का एक बटखरा भी मिलता है। अतः इतनी अधिक
सामग्रियों के मिल जाने के बाद सैंधव सभ्यता के लिए
किसी पाश्चात्य पश्चिमाई प्रेरणा को ढूंढ़ने की आवश्यक
ता नहीं प्रतीत होती तथा यह स्पष्ट हो जाता है कि

Scanned with CamScanner

इस सभ्यता की जड़े भारतीय उपमहाद्वीप में ही जमी थी।
नगर का विकास सुदृढ़ ग्रामीण आधार के बिना सम्भव
नहीं है और यह आधार निश्चित रूप से सिंध, पंजाब, हरियाणा
तथा राजस्थान की समृद्ध ग्रामीण संस्कृतियों ने प्रदान
किया था। सम्भव है भविष्य की खुदाइयों ने इन क्षेत्रों से
और अधिक स्पष्ट प्रमाण प्राप्त हो जाए। अतः इस सम्भावना
से इंकार नहीं किया जा सकता है कि सैंधव सभ्यता का
विकास इसी क्षेत्र की पूर्ववर्ती सभ्यताओं से हुआ है।
एक नवीन खोज, जिसके जनक पुरातत्ववेत्ता प्रो० मीडो है।
में दावा किया गया है कि सैंधव सभ्यता को प्राचीनतम
मानना एक भ्रान्ति है। भारत के सबसे प्राचीन सभ्यता सरस्वा
ती नदी के तट पर सिंधु सभ्यता के पूर्व लगभग 3300 ई०
फली-फूली तथा विकसित हुई। अब वेदों से वर्णित
सरस्वती का अस्तित्व उपग्रह से प्राप्त चित्रों के आधार

प्रमाणित हो चुका है। इस नदी का बहाव उस समय हिमालय से लेकर वर्तमान हरियाणा, राजस्थान और गुजरात तक था। राखीगढ़ी के उत्खनन से इस धारणा को बल मिला है।

सैंधव सभ्यता के प्रमुख तत्व

नगर तथा भवन

भारतीय इतिहास में नगरों का प्रादुर्भाव सर्वप्रथम सैंधव सभ्यता से हुआ। नगर एक ऐसा विशाल जन समूह होता है जिसकी जीविका प्रधानतः उद्योग धन्धों तथा व्यापार-वाणिज्य पर निर्भर करती है। व्यवसायिक उत्पादनों के विनिमय द्वारा उसे ग्रामों से खाद्यान्न प्राप्त होता है। हड़प्पा सभ्यता के नगरों की खुदाई पर विशेष ध्यान दिया गया है। प्रमुख नगर जिनकी खुदाई की गयी है। - हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, लोथल, कालीबंगन, बनावली तथा धौलावीर। इन्हें के आधार पर इस सभ्यता के नगर नियोजन तथा भवन विन्यास

की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इनमें भी वैज्ञानिक

उत्खनन केवल मोहनजोदड़ो का ही हुआ है

हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो -

सैंधव सभ्यता के प्रमुख नगरों में मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा उल्लेखनीय हैं! हड़प्पा सम्प्रति पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के अंतर्गत शाहीवाल जिले में स्थित हैं! हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो उच्चकोटी के नगर निवेश का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं! उनका विधान दुर्ग के रूप में किया गया है। जिनमें परिखा, प्राकार, द्वार अट्टालक, राजमार्ग, प्रासाद, कोष्ठागार, सभा, जलाशय आदि वास्तु के सभी तत्व प्राप्त होते हैं। इन नगरों की खुदाई में पूर्व तथा पश्चिम में दो टीले मिलते हैं! पूर्वी टीले पर नगर तथा पश्चिमी टीले पर दुर्ग स्थित था। नगरों के दुर्ग ऊँची और चौड़ी प्राचीरों (सुरक्षा भित्ति) से घिरे थे! प्राचीरों के बुर्ज तथा मुख्य दिशाओं के द्वार (गोपुरम्) बनाये गये थे।

Scanned with CamScanner